तर्ज-- दिल के अरमां आसुंओं

हम कहां के थे कहां पर आ गये
गुलशने फरामोशी में भरमा गये
1--कुफर की दुनिया के काबिल थे न हम
खेल होगा धाम में धोखा खा गये
2--इश्क हक की जात से हुए बेखबर
चाहे मजबूरी से हम घबरा गये
3--तुम न आते तो कहीं के ना थे हम
जान कर निसबत हमें जगा रहे
4--आपसे हमको शिकायत कुछ नही
अपने आमालो से खुद शरमा गये
5--पिया की वाणी से सुंकू मिलने लगा
देने वाले के करिश्मे छा गये
6--जाम की मस्ती ने खैचां इस कदर
बिन चले खुद को यहां पर पा गये

Nijanand App